महानिदेशक का सन्देश

हिन्दुकुश हिमालय में जल का मूल्याङ्कन

हर वर्ष 22 मार्च को आने वाला विश्व जल दिवस हमें समाज व प्राकृतिक जगत में जल की महत्वपूर्ण भूमिका का स्मरण sकराता है। विश्व जल दिवस 2021 का विषय है "जल का मूल्याङ्कन"। विश्व जल दिवस के प्रायोजक संयुक्त राष्ट्र संघ का कहना है कि जल के मूल्याङ्कन में आर्थिक परिभाषाएं सम्मिलित हैं, परन्तु इसके परे, इसमें अनेक व्यक्तिगत व सामाजिक दृष्टिकोणों से निकले सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य भी शामिल हैं। अतः, विश्व जल दिवस पर अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र में हम एक संस्थागत दृष्टिकोण से यह पूछते हैं, कि हम जल का मूल्याङ्कन कैसे करते हैं?

एक प्रारंभिक उत्तर तो अन्तर्निहित सा है: हम प्रायः अपने कार्य-क्षेत्र व इसके महत्त्व को ऐसी अवधारणाओं में व्यक्त करते हैं जो जल से परिभाषित अथवा प्रभावित होती हैं। अपने क्षेत्रीय अधिदेश का उल्लेख करते हुए, हम हिन्दुकुश हिमालय को एशिया के जल-स्तम्भ के रूप में चिन्हित करते हैं जो 190 करोड़ लोगों को जल प्रदान करता है। हिन्दुकुश हिमालय में घटते हिमनद व सूखते झरनों के विवरण जलवायु परिवर्तन की गंभीरता को स्पष्टता से दर्शाते हैं। जल का महत्त्व हमारे कार्य में और भी प्रदर्शित होता है: जल-सम्बन्धी घटक हमारे संस्थागत ढाँचे के लगभग हर क्षेत्रीय कार्यक्रम व विषय में समाहित है।

हमारे सहभागियों के संग किये गए हमारे शोध व कार्यान्वयन के कारण, व मूल्याङ्कन के और अधिक स्पष्ट रूपों के माध्यम से जल की महत्ता और भी रेखांकित होती है। हमारे कार्य में यह मूल्याङ्कन विभिन्न रूप ले सकता है। मात्रात्मक आर्थिक मूल्याङ्कन, जैसे, उत्पादकता के अनुमान अथवा जल का कम मूल्याङ्कन उन स्थितियों के विश्लेषण का परिणाम हो सकता है जहाँ जल दुर्लभ है अथवा इसके प्रतिस्पर्धात्मक उपयोग हैं। हिन्दुकुश हिमालय में इस मूल्याङ्कन में वे जल उपयोग भी सम्मिलित हैं जो पर्वतीय व तराई क्षेत्रों में समान हैं, जैसे, जलापूर्ति, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं, सिंचाई, एवं साथ ही विशेष रूप से पर्वतों से सम्बद्ध जल उपयोग व हाइड्रोलॉजिक/(जलवैज्ञानिक) प्रक्रियाएं जैसे पनबिजली व हिमनदों के द्रव्यमान/आकार में परिवर्तन जो की भविष्य में नीचे की ओर होने वाली जलापूर्ति को प्रभावित कर सकते हैं। परन्तु, जल मूल्याङ्कन की अवधारणा को जल के लाभकारी उपयोगों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। जल का "हानिकारक" मूल्य भी हो सकता है। उदाहरणतः, हमारे शोध का एक सक्रिय भाग - हिमानी झील में आई बाढ़ से हुई आर्थिक क्षति, अथवा हाल ही में बड़ी मात्रा में चट्टानों के खिसकने से उत्तराखंड, भारत में आयी बाढ़ जिसमें अनेक लोग मारे गए व पनबिजली सुविधाएं नष्ट हो गयीं।

यद्यपि, जल के कुछ मूल्यों का परिमाणन संभव नहीं है। जैव-विविधता केंद्रों को सहयोग प्रदान करने में मानसूनी वर्षा का मूल्य हम कैसे निर्धारित करेंगे? पर्वतीय समुदायों की जीवन शैली में सहयोग देने हेतु पर्वतीय झरनों का सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्य निर्धारण कैसे संभव है? अथवा, पर्यावरणीय पर्यटन को बर्फ से ढकी चोटियां जो स्वाभाविक मूल्य प्रदान करती हैं, उसका निर्धारण किस प्रकार हो सकता है? जल के इन अमूर्त मूल्यों पर भी विचार आवश्यक है, एवं यह

हिन्दुकुश हिमालय में लोगों व पर्यावरण की भलाई हेतु अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र द्वारा किये जा रहे काम के अभिन्न अंग हैं।

इस वर्ष का विश्व जल दिवस "जल के मूल्याङ्कन" पर आधारित है। अंततः, जल पर इसके सभी उपयोगियों व इसके उपयोग एवं प्रभाव के सभी आयामों - भले ही वे मात्रात्मक हों अथवा अमूर्त हों - द्वारा लगाए गए मूल्य/महत्त्व पर विचार कर के ही हम हिन्दुकुश हिमालय में जल के सही मूल्याङ्कन की ओर बढ़ सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र में यही हमारा लक्ष्य है। आइये, हम अपने जीवन में, हिन्दुकुश हिमालय में, व सम्पूर्ण विश्व में जल के मूल्य, इसके महत्त्व को स्वीकार करें।

पेमा जम्सो

महानिदेशक, अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र